प्रवाह....

दिसम्बर 2014 नवम अंक

आर. सी. ए. गर्ल्स (पी.जी०) कॉलेज, मथुरा

का अद्धवार्षिक पत्र

In this Issue ....

- From the Principal's Desk
- Editorial
- Students' Corner
- Experts' Corner
- Bulletin Updates
- Forthcoming Events
- Achievements
- From Newspaper
- Memories

EDITORIAL BOARD ....

Patron :

Dr. Preeti Johari

Chief Editor :

Dr. Anju Bala Agrawal

Editors :

Dr. Archana Pal

Dr. Bharati Sagar

Creative Head :

Dr. Sandhya

नारी बिना साहित्य जगत है अपूर्ण

ममता
एम0ए0 उत्तरार्द्ध, संस्कृत

साहित्य मानवीय संवेदनाओं के चिन्तन एवं चित्रण की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। नारी सजल संवेदनाओं का मूर्तरूप है। अतः साहित्य नारी के बिना आधा अधूरा एवं एकांगी है। नारी साहित्य के साम्राज्य पर सदैव ही अधिष्ठित और प्रतिष्ठित रही है। साहित्यकार मानते हैं कि कविता का उद्‌गम स्रोत नारी से प्रेरित है। नारी स्वयं एक कविता है। नारी स्वयं एक परिपूर्ण साहित्य है। नारी की पवित्रता, शुचिता, सौंदर्य के बिना साहित्य की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। नारी और साहित्य का संबंध अनन्य और अखण्ड रहा है। नारी के गर्भ से साहित्य की सृजन धारा फूट पड़ी है। सृजन की इस महती प्रक्रिया में नारी का योगदान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनो रूपों में हुआ है। नारी की सौंदर्यानुभूति, नैतिक एव सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, सामाजिक परिवेश का चित्रण ये तीन संवेदनाऐं ही मानव मन को साहित्य सृजन के लिए प्रेरित करती हैं। भारतीय साहित्य में पुरातन से अद्यतनकाल तक सौन्दर्य एवं श्रृंगार को विशिष्ट स्थान प्राप्त है और हो भी क्यों न, क्योकि संवेदना की धारा जब उमड़ती है सौन्दर्य एवं श्रृंगार स्वतः स्फूर्त आलोकित एवं उद्वेलित होते हैं। साहित्य की प्राचीन एवं श्रेष्ठ सौंदर्याभिव्यक्ति (सौन्दर्यानुभूति) कालिदास, जायसी, तुलसी से लेकर पन्त, प्रसाद और निराला आदि तक अविच्छिन्न रूप से निखरी है।

नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में भी नारी ने साहित्य को अपूर्व योगदान प्रदान किया है। संस्कृति को सींचने के लिए नारियों ने स्वयं को खपा दिया है। नारी अपने दर्द को लेखनी के माध्यम से उड़ेलती रही है। सामंती मानसिकता पर करारा प्रहार करने वाली नारी लेखिकाओं की कमी नहीं है। रामधारी सिंह दिनकर ने तो यहाँ तक कह दिया है कि सांस्कृतिक संवेदना नारी के बिना अपंग अपाहिज के समान है। नैतिकता एवं सामाजिकता के अनेक विषयों को नारियों ने साहित्य से जोड़ा और अपनी अस्मिता और अस्तित्व का बोध कराया है।

साहित्य साधिकाओं में मीराबाई का नाम ध्रुवतारा के समान प्रदीप्त है। मीरा न रण क्षेत्र में जूझी और न जौहर की ज्वाला मे जली बल्कि तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक बन्धनों को तोड़कर उन्होंने भक्ति के साथ प्रेम एवं पीड़ा का अभिन्न भाव साहित्य को प्रदान किया। अपरिमित अनुभूतियों के कोष की अधिकारिणी मीरा हिन्दी साहित्य के काव्य फलक पर महान कवियत्री के रूप में प्रतिष्ठित हैं। मीरा की कविता के बिना हिन्दी साहित्य का लालित्य अधूरा माना जाएगा। हिन्दी साहित्य में दूसरी मीरा कही जाने वाली विभूति तथा छायावाद को एक नए रूप मे पहचान देने वाली महादेवी वर्मा ने अपनी अभिव्यक्ति को सरस सुन्दर ढंग से निहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, सन्धिनी आदि रचनाओं में उकेरा है। पद्य के साथ साथ गद्य क्षेत्र में भी उनका कार्य प्रशंसनीय है उनकी रचनाओं में संवदेनशील एवं कुतूहल मिश्रित वेदना की बहुतायत है। मीरा ने आधुनिक काल के साहित्य जगत में नारी की प्रतिभा, विद्वता एवं गरिमा को अक्षुण्ण बनाऐ रखने में जो योगदान दिया उसे कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है तथा अन्य महिला साहित्यकारों जैसे तोरन देवी शुक्ल, विद्यावती, कोकिल की रचनाओं में भी आत्मा परमात्मा विषयक नारी के प्रेम स्वरूप को ही अभिव्यक्ति मिली है।

आधुनिक साहित्य में भी नारियो की प्रबल एवं प्रखर उपस्थिति रही है। आज नारियों ने साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए जीवन और समय के जटिल एव गूढ़ सवालों के समाधान में अपना चिन्तन प्रस्तुत किया है। उनके चिन्तन और विचार ने समाज में अपनी छाप छोड़ी है। इस संदर्भ में कृष्णा सोवती का "जिंदगीनामा" एवं "दिलोदनिश", मन्नू भण्डारी का "महाभोज" महाश्वेता देबी का "जगंल के दावेदार", प्रभा खेतान का "तालाबंदी", मृदुला गर्ग का "अनित्य" आदि रचनाऐं मुख्यधारा है। अरून्धती राय की "दि गॉड ऑफ स्माल थिंग" तो बुकर पुरस्कार से सम्मानित हो चुकी है। झुंपा लाहिड़ी की कहानियाँ भी अनेकानेक रागों से विभूषित हो चुकी है।

इस प्रकार अपनी विविध कृतियों के माध्यम से लेखिकाओं ने अपने लेखन में नारी की शोषित होती पीड़ा को ही स्वर नहीं दिया बल्कि उसे विरोध एवं आक्रोश के तेवर देकर बदलने को विवश भी किया है। साहित्य के माध्यम से लेखिकाओं ने अपने फैसले विवेकपूर्ण ढंग से खुद लेने की सामर्थ्य रखने वाली आत्मसजग स्त्री की छवि को उकेरा एवं उभारा है। वैदिककाल की नारियाँ जैसे– अपाला, गार्गी, अरूंधती, अनुसुइया आदि ने भी अपने चिन्तन से नारी जगत को नई दिशा दी, नव प्राण का संचार किया। ठीक इसी प्रकार आधुनिक काल मे अमृता प्रीतम, चन्द्रकिरण, उषा देवी मिश्रा, उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोवती, शशिप्रभा शास्त्री, मृणालपाण्डे, सूर्यवाला, राजी सेठ, हर्षिता, मणिका मोहनी, मैत्रेयी पुष्पा, रितु शुक्ला, शिवानी आदि तमाम रचनाकारों की सशक्त कृतियों से समृद्ध होती हुई आज नारी चेतना सम्पन्न एव सुदृढ़ धरती पर पहुँच गयी है। नारी की खोई हुई प्रतिष्ठा एवं सम्मान दिलाने एवं उसके आन्तरिक विकास के लिए प्रतिबद्ध लेखिकाऐं हिन्दी साहित्य जगत में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं।

"इक्कीसवीं सदी नारी सदी" की सम्भावना को साकार करने का यह श्रेष्ठ एवं पुण्य कार्य है जिसे किसी भी कीमत पर करना ही चाहिए।

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय चित्रकला

वैशाली
बी0ए0 तृतीय वर्ष

स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय कला क्षेत्र में तीन कलाधाराओं का प्रचलन था–

1. पुनरूत्थानवादी कलाधारा जो अजन्ता, राजस्थानी, मुगल आदि प्राचीन कला परिपाटियों की पोषक थीं।
2. लोक–रीतिवादी कलाधारा जो भारतीय लोकानुरागी मॉडलों को आधार बनाकर लोक परम्पराओं में आस्थावान थी।
3. पश्चिमी चित्र शैलियों से प्रेरणा पाकर चेतन और अचेतन जीवन का चित्रांकन करने वाली शास्त्रीय धारा, उसकी तैल चित्रण की रीति, नीति, प्रकाश छाया का मिश्रण, कैनवासी धरातलों पर जीवन के प्रत्येक जीवंत क्षणों को आकार देना एक सर्वथा आधुनिक सर्वथा नवोन्वेशी।

शास्त्रीय रीति के कलाकारों में जे0पी0 गाँगुली, अतुलबोस, हालदंकर, गोपाल देवस्कर, दिलीपदास, सातवलेकर, त्रिनदादे आदि चित्रकार तथा मूर्तिकारों में म्हात्रे, करमरकर, देवीप्रसाद राय चौधरी और कामत आदि अग्रगण्य हैं।

स्वतन्त्रता मिल जाने के पश्चात् तो पाश्चात्य प्रभावों की बाढ़ सी आ गयी। विदेशी कला आन्दोलनों की गूँज यहाँ इस हद तक प्रतिध्वनित हुई कि एक बार भारतीय चित्रकला को भी अपनी अस्मिता

के लिये शंका हो गयी।

समसामयिक चित्रकारों में रामकिंकर बैज, सुधीर रवास्तागीर, हुसैन, रजा, सुज़ा, अलमेलकर, हैब्बार, एन0एस0 बेन्द्रे, पदमसी, गायतोंडे, सामन्त, सतीश गुजराल, पणिक्कर, कृष्ण खन्ना, रामकुमार, शैलोज, वीरेन डे, नीरोदे मजूमदार, परितोष सेन, के0एस0 कुलकर्णी, चावड़ा अविनाश चन्द्र, लक्ष्मण पई, आरा आदि तथा मूर्तिकारों में भावेश सान्याल, प्रदोषदास गुप्त, चिन्तामणिकर, धनराज भगत, रामकिंकर बैज, सुधीर रवास्तागीर तथा लेखा चित्रकलाकारों में कंवलकृष्ण, सोमनाथ होर तथा कृष्ण रेड्डी आदि ये सारे कलाकार विविध शैलियों, तकनीकों और मुहावरों में क्रियाशील हैं। इन कलाकारों में कौन कितना सफल है कौन कितना सबल है या किसकी कला बहुआयामी है या अन्तर्राष्ट्रीय कला क्षेत्र में स्थापित है। यदि कोई यह जानना चाहे तो यही कहा जा सकता है कि भारतीय कला में आधुनिक प्रवृत्तियों पर अभी स्वतंत्रता प्राप्त किये कितना समय हुआ है। उसमें आधुनिक प्रवृत्तियों ने कोई निश्चित या नियत रूप धारण नहीं किया है और न कोई स्थापनायें ही की हैं जिनके बल पर या जिनके आधार पर किसी प्रकार की टीका की जा सके।

इतना अवश्य है कि आधुनिक भारतीय कला ने जो गुणावगुण अर्जित किये हैं। उनका लेखा जोखा अवश्य हो सकता है। आधुनिक कला ने बराबर कमनीयता और स्निग्ध कोमल लालित्य से बचने का प्रयत्न किया है। चाक्षुष परिप्रेक्ष्य की स्वीकृति आज कोई विवशता नहीं रह गयी, वह तो अभिव्यक्ति की सहायक मात्र है। वैविध्य और वैषम्य आज चित्रकला की माँग है। आज चित्रकार प्रकाश और छाया के सहारे भ्रम उत्पन्न करने की कोशिश नहीं करता। अनुपात, शरीर रचना प्रकृतता चित्रकार के शस्त्रागार के आयुध है। वे आज अनिवार्य तत्व नहीं रह गये। आधुनिक कला में एक परिवर्तन आया है और वह है आयामों की अवधारणा का परिवर्तन। चित्रकार या मूर्तिकार अब तीन आयामों में रूप का रूढ़िगत विवरण प्रस्तुत करके संतुष्ट नही हो जाता। रूप अब अपने ही विविध पहलुओं को अपने ऊपर आरोपित करके काल के आयामों को व्यक्त करने का प्रयास करता है। आधुनिक कला में रूप की स्थिति कुछ वैसी ही है जैसी खुर्दबीन की गहरी पैठ जाने वाली नजरों से देखने पर अजीब तरह की अणु और रंग के निक्षेपों की लगती है। आधुनिक चित्र फलक पर जो भी आवेशजन्य अभिव्यक्तियाँ होती है, उनमें मानव मन के गहन विक्षोभ की अभिव्यक्ति अवश्य होती है, चाहे कितनी धुँधली क्यों न हो। यह विक्षोभ पैदा हुआ है आज के जीवन की गति और हिंसा के तथा उसके सहवर्ती युद्ध के तथा ताल मेल बैठाने की प्रक्रिया में। आधुनिक कलाकार एक बुनियादी भाषा का विकास करने मे दत्तचित्त है। आज का अमूर्त अथवा वस्तुनिष्ठहीन चित्रकार रंग को, तनावों, रेखाओं, बनावटों और वातावरण को अभिव्यक्ति का साधन भी मानता है और साध्य भी लगता है मानो कला आत्म बोध की प्रक्रिया से गुजर रही हो। अब चित्रकार चित्रकला के विषय में अंकन करता है और हम साधिकार कह सकते हैं कि चित्र चित्र होता है, केवल चित्र।

दुनियाभर में कला आज स्थानीयता से मुक्त होती जा रही है। कला का आधुनिक आन्दोलन हर स्रोत से आदान कर लेता है। दुनिया के हर साधन का उपयोग करने को तत्पर रहता है। सारे संसार की कलायें कलाकारों और कलाविदो के समग्र चेतना में अपने सारतत्व का एकान्वय करती जा रही है। आज के जापानी और फ्रांसीसी चित्रकारों को दुनिया की एक समान दाय प्राप्त है। संभव है कि भविष्य में हमारे कलाकार अपनी प्रतिभा को समन्वित करके एक नये युग की कला को वाणी प्रदान करें।

ग्रामीण भारत में धर्म, जाति एवं मतदान

मनीषा
बी0ए0 प्रथम वर्ष

भारत की शुरूआत गाँवों से होती है। ग्रामीण भारत में धर्म, जाति एवं मतदान के विषय में हम देखते हैं कि ग्रामीण भारतीय अपने मत के प्रति जागरूक नहीं होते हैं। मतदान के समय वे केवल अपने धर्म एवं जाति के ही व्यक्तियों को चुनते हैं। ऐसे नेता केवल स्वयंहित से ही मतलब रखते हैं तथा उन्हीं व्यक्तियों को लाभ पहुँचाते हैं, जो उन्हें मत देते हैं।

ग्रामीण भारत में अधिकतर अशिक्षित जनता निवास करती है तथा प्रत्येक व्यक्ति का यह मानना होता है कि वह अपना मत उसी व्यक्ति को देगा जो उसकी जाति व धर्म का है। ग्रामीण लोगों का यह विश्वास होता है कि वे यदि अपनी जाति एवं धर्म का व्यक्ति चुनेंगे तो वह उन्हें अधिक सुविधायें प्रदान करेगा। वर्तमान में परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं, आज कोई भी नेता केवल धर्म व जाति के आधार पर नहीं, बल्कि राष्ट्र सेवा के आधार पर अपना योगदान देता है।

विभिन्न प्रकार के भ्रष्ट राजनेताओं ने युवावर्ग की चेतना व चिन्तन पर इस प्रकार का कुठाराघात किया है कि वे अब राजनीति से दूर ही रहना उचित समझते हैं। युवा वर्ग मतदान के समय अपने मत का भी प्रयोग नहीं करते हैं, जिससे न ही स्पष्ट बहुमत आता है और न ही स्पष्ट सरकार का गठन होता है। इस स्थिति को बदलने के लिये युवा वर्ग को अधिक सचेत व जागरूक करने की आवश्यकता है क्योंकि **"आज का युवा ही कल का भविष्य है।"**

ग्रामीण भारत के लोग अपने रोजमर्रा के जीवन में इस प्रकार व्यस्त होते हैं कि वे राजनीतिक जीवन के प्रति जरा सी भी जागरूकता नहीं दिखाते हैं। व्यक्तियों का अधिकतर समय अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति में ही निकल जाता है जिसके कारण वे अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का उपयोग उचित रूप से नहीं कर पाते हैं। ग्रामीण भारतीय परस्पर जागरूकता के अभाव में श्रेष्ठ व योग्य व्यक्तियों को न चुनकर अपनी जाति व धर्म के व्यक्तियों को अधिक महत्व देते हैं। जब गाँवों में उचित मतदान नहीं होता है, तो वहाँ सुविधायें भी पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हो पाती हैं।

गाँवों की भोली भाली जनता को राजनेता विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर खरीद लेते हैं। अतः जो नेता ऐसा करता है, उस पर कानून का उल्लंघन करने का आरोप लगाया जा सकता है। अतः हमें किसी धर्म, जाति व सम्प्रदाय को महत्व न देते हुये अपने राष्ट्र के लिये योग्यतम व्यक्ति का चुनाव करना चाहिए।

राजनीतिक शिक्षा के नियमों से परिचित व्यक्ति अपने मताधिकार का उचित प्रयोग करके सबल व कर्मठ सरकार का निर्माण कर सकते हैं। गाँवों का शिक्षित वर्ग ग्रामीण मतदाताओं को उचित परामर्श देकर योग्य व्यक्तियों को मत देने के लिये प्रोत्साहित कर सकता है। राष्ट्र सेवा व देशभक्ति के माध्यम से ही कोई नेता प्रत्येक क्षेत्र को सुख सुविधाओं से फलीभूत कर सकता है। अतः आवश्यकता है कि परिस्थितियों को देखते हुये समाज में परिवर्तन लाना बहुत जरूरी है। हमें धर्म व जाति के आधार पर नहीं वरन् अपने मत के माध्यम से योग्य, शिक्षित व कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को ही चुनना चाहिये।

1st Prize Winner Essay of Inter-college English Essay Competition 2013-14

Nimra Lodhi
Ex-Student

CORRUPTION IN POLITICS

Corruption is the latest epidemic in politics,
Eating the people, looting the nation,
No cure, no medicine, no special hospitals.

Politics and corruption are life-long buddies. They live together, eat together and breathe together but cannot be separated. This intimacy is appeased only by sighs of public. India is a democratic country, where government is as 'Abraham Lincoln' said, 'of the people, for the people, by the people'. But today, this definition has completely changed. Now government stands only for money and personal advantage. Consequently, public is facing a pang of corruption. Recent demonstration in Ramleela Maidan and sudden birth of 'Aam Aadmi Party' are the clear reflections that Indian public have been fed up with this disgusting politics. Before discussing it more, let us see this disease more attentively and figure out some cures and preventions for it.

What is Corruption

First of all one serious question strikes our mind that what corruption exactly is? It is not easy to define corruption because it is a multi-headed monster which can appear in so many forms. Yet, in a nutshell, corruption can be defined as moral depravity and influencing through bribery. Essentially, corruption is the abuse of trust in interest of private gain. For us, it is not a new term. The laws of 'Manu' show that corruption had its dark foot in ancient India also. In 2012, India has ranked 94th out of 176 countries in Transparency International Corruption Perception Index tied with Greece, Mangolia, Columbia and Senegal.

Different Shades of Corruption

For our convenience, corruption can be divided in five broad types:

A. Transactive Corruption: It is a mutual agreement between the donor and recipient.

B. Extortive Corruption: it refers to the corruption where donor is compelled to bribe in order to avoid harm being inflicted upon his person or interest.

C. Defensive Corruption: This type of corruption appears in self-defense.

D. Investive Corruption: This corruption involves the offer of goods and services without any direct link to present favour but in anticipation of future occasions when favour will be required.

E. Nepostic Corruption: Nepostic corruption or nepotism refers the unjustifying appointments of friends and relatives to public offices., violating the norms and rules of the organization

Blot of Corruption on Indian Political Canvas

Corruption is now synonymous with politics. Our dream of a good governance got shattered in 1948 when the first case of corruption cropped in independent India with 'Jeep Scandal', a purchasing of jeeps without following the legal procedure. Contrary to demand for enquiry Committee led by Aanthasayanam Ayyanger, the government announced in September 30, 1955 that the case was closed. Soon on February 3, 1956, case victim 'Krishnan Menon' was inducted in Nehru cabinet as a minister without portfolio. It continued in 1950s and 1960s with Mudgal Case(1951), Mundra Deals(1957-58), Malaviya-Sirajuddin Scandal(1963), Pratap Singh Kairon Case(1963). But it was an irony that after a series of such cases, public did not find any resignation on political table.

The trend continued in 1980s with the infamous U.P. Malhotra Case, Fairfax deal, HBJ Pipeline Scandal, HDW Submarine Case. The 1990s saw notorious Bofors Case(19900, Harshad Mehta Security Scam(1992), Hawala Scam and Urea Scam(1996). The 21st century witnessed the strain of Corruption as Uttar Pradesh Food Grain Scam (2003), 2G Spectrum Case(2010), Karnataka Wakf Board Land Scam (2012) and so many because list will never end.

Today, all political parties are busy uncovering the corruption of our government overlooking their own records. And we, as public, are criticizing each government for it. We can say, nowadays, politics is only for criminals and criminals are meant politicians.

Causes of Corruption in Indian Politics

It is very sad that these corrupt politicians have always a deaf ear towards public. But have you ever thought what are the reasons of corruption which make the politics horrible. The reasons are:

A. Emergence of such political elite who believe in interest oriented rather that nation-oriented programs and policies.

B. The corruption is caused as well as increased because of the change of moral and ethical values of politicians.

C. Tolerance of people towards disgusting politics, complete lack of public outcry against corrupt politicians and the absence of strong public forum to oppose corruption, allow it to reign over people.

D. Election time is a time when corruption is at peak level. Bribery to politicians buys influence and bribery by politicians buys votes. In order to get elected, politicians bribe poor, illiterate people who are slogging for two meals.

Politics and Corruption: Two Sides of the Same coin

Honest leaders are a rare breed today. Ministers like Pt. Jawahar Lal Nehru, Lal Bahadur Shashtri, Sardar

Vallabh Bhai Patel etc. are rare who had very little bank balance. But today, politicians have such a huge amount that even they don't know the exact figure. Once George Decon quotes:

Corrupt politicians made the other ten percent look bad.

It is very shameful that these politicians try to rise and remain in power by any means, right or wrong. In a democracy, all parties need money, so they violate morals and ethical norms and evade laws to gain political power. Many politicians are reported to file their nomination simply for obtaining quotes for diesel, coal, petrol etc. which they sell to others at higher price.

Money is poured into elections and votes are purchase. Booth capturing and unfair voting are also practiced by corrupt politicians. The close relationship between white collar criminals and political leaders can be demonstrated by the above similar instances. These politicians do not hesitate to sacrifice their commitments and people's confidence for petty advantages. Defection has become the most fascinating tool in the hands of politicians for making their future safe from many years. They defect within no time for the lust of money, power and position.

How to Get Rid of it

Corruption is one million times bigger than the Everest and deeper than the deepest oceans. It is not pebble that you can pick it up and throw it. Though it is true an all know that politicians are involved in so many scams and scandals but nothing tangible has been one in uncovering, tracing apprehending and punishing them. They become free from the hands of prosecution on the plea of so-called inadequate evidence because again political influence and interference can be seen at all stages from investigation to stage of adjudication of that corrupt politicians.

So it is recommended that setting up an agency to collect information from all agencies and take immediate and effective action against the crime syndicates, smuggling gangs and economic lobbies in the country which have over the years, developed an extensive network for contacts with government.

Summing Up

It is well known that in Indian politics, corruption has wings not wheels and a large number of politicians are corrupt. As nation grows, the corrupt politicians also grow to invent new methods of cheating public. Though the fight against corruption is difficult, yet I believe something is better than nothing. So, we have to pull our socks up to eradicate corruption out of our politics and of our nation.

If only corruption can be curbed
India will become a paradise
A billion souls can live in peace
And prosperity will dwell upon all.

मतदाता जागरूकता अभियान

अकादमिक सत्र 2014–15 में नवम्बर माह में महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजनाधिकारी इकाई I डॉ0 भारती सागर एवं इकाई II श्रीमती मंजु दलाल के संयुक्त प्रयास से त्रिदिवसीय **''मतदाता जागरूकता अभियान''** दिनांक 12 नवम्बर 2014 से 14 नवम्बर 2014 तक सम्पन्न किया गया।

मतदाता जागरूकता अभियान का शुभारम्भ 12 नवम्बर को मथुरा जिले की स्वीप कोर्डिनेटर डॉ. प्रतिमा गुप्ता द्वारा **''लोकतन्त्र में मतदाता की भूमिका''** विषय पर विशेष व्याख्यान द्वारा हुआ। व्याख्यान मे लोकतन्त्र में मतदाता की भूमिका तथा मतदान की प्रक्रिया से अवगत कराया। व्याख्यान में मथुरा जिले में मतदान केन्द्रों इत्यादि से सम्बन्धित जानकारी छात्राओं को दी।

व्याख्यान के उपरान्त अगले चरण में **''ग्रामीण भारत में जाति धर्म और मतदाता''** विषय पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इसमें निर्णायकगण थी के. आर. कॉलेज की समाजशास्त्र विभाग की प्रवक्ता डॉ. कविता कनोजिया। निबंध प्रतियोगिता में शक्ति चतुर्वेदी बी.ए. द्वितीय, शिवानी शर्मा एम.ए. उत्तरार्ध एवं कल्पना उपाध्याय बी.ए. तृतीय ने क्रमश प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किये।

मतदाता जागरूकता अभियान के दूसरे दिन, दिनांक 13 नवम्बर 2014 को **''जागरूक मतदाता देश का उज्जवल भविष्य''** विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता के निर्णायकगण के. आर. गर्ल्स कॉलेज से चित्रकला विभाग की प्रवक्ता डॉ. रश्मि एवं महाविद्यालय से हिन्दी विभाग की प्रवक्ता डॉ. नीतू गोस्वामी रहीं। प्रतियोगिता में प्राची पालीवाल बी.ए. द्वितीय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, द्वितीय स्थान बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की दीक्षा शर्मा ने प्राप्त किया, तृतीय स्थान पर बी.ए. द्वितीय वर्ष की खुशबू राजपूत रहीं। इस दिन मतदाता अभियान के अगले चरण में मतदान व मतदाता पर काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें निर्णायकगण के. आर. गर्ल्स कॉलेज की संस्कृत विभाग की प्रवक्ता डॉ. पल्लवी सिंह, महाविद्यालय संस्कृत विभागाध्यक्षा डॉ. अर्चना पाल एवं हिन्दी विभाग से डॉ. राजकुमारी पाठक रही। छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर प्रतियोगिता मे सहभागिता की। शालू गोला, बी.ए. तृतीय वर्ष, नीति शर्मा, बी.ए. द्वितीय वर्ष एवं रोशनी अग्रवाल, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष ने क्रमशः में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किये।

मतदाता जागरूकता अभियान के तीसरे और अन्तिम दिन 14 नवम्बर 2014 को रंगोली एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। **''लोकतन्त्र में महिला मतदाता की भूमिका''** विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में निर्णायकगण समाजशास्त्र विभाग के सेवानिवृत प्रवक्ता डॉ. शरद सक्सैना महाविद्यालय से डॉ. गीता अग्रवाल एवं डॉ. कल्पना वाजपेयी रही। प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम वर्ष से मनीषा गोस्वामी ने प्रथम, नीति शर्मा बी.ए. द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान एवं शालिनी राघव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

रंगोली प्रतियोगिता **''जागरूक मतदाता लोकतन्त्र का उज्जवल भविष्य''** विषय पर आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में बी0ए0 द्वितीय वर्ष से प्राची पालीवाल ने प्रथम, बी.ए. द्वितीय वर्ष से ऐश्वर्य गुप्ता ने द्वितीय एवं खुशनुमा बी.ए. तृतीय वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी प्रतियोगिताओं में छात्राओं की सहभागिता उत्साहजनक रही।

संस्कृत शिक्षा और रोजगार की संभावनाएं

पूजा पालीवाल
प्रवक्ता, संस्कृत विभाग

देववाणी संस्कृत भाषा अत्यधिक प्राचीन एवं व्यापक है। इस भाषा में रचित वैदिक एवं लौकिक साहित्य संसार के विज्ञजनों को आकर्षित करता है। यह भाषा अत्यधिक प्राचीन होते हुए नित्य ही सत् साहित्यकारों के प्रयास से नवीन स्वरूप को प्राप्त कर रही है। इस भाषा में पुरूषार्थ चतुष्टय धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से सम्बन्धित साहित्य के अतिरिक्त सुविस्तृत ज्ञान विज्ञान एवं मानव जीवन से सम्बन्धित ज्ञान राशि का समावेश है। इसीलिए सुसमृद्ध इस भाषा का अध्ययन–अध्यापन संसार के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में संचालित हो रहा है।

वर्तमान समय में शिक्षा को व्यवसाय एवं रोजगार से जोड़ने का प्रयास शिक्षाविदों द्वारा किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में इस प्राचीनतम भाषा का उपयोग आजीविका के क्षेत्र में क्या हो सकता है एक महत्वपूर्ण प्रश्न है? हमारे देश के लगभग 15 विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा के लाखों छात्र संस्कृत भाषा का अध्ययन एवं प्राचीनतम ग्रन्थों की समीक्षा करते हुए प्रबुद्ध आचार्यों के निर्देशन में विशिष्ट शोध कार्य कर रहे हैं। हमारे देश में प्राथमिक स्तर से लेकर स्नातकोत्तर स्तर तक संस्कृत भाषा का अध्ययन अध्यापन कार्य हो रहा है। इसके लिए छात्र स्नातक स्नातकोत्तर में संस्कृत विषय का अध्ययन कर अथवा शिक्षा शास्त्री विद्या वारधि एवं विद्या वाचस्पति जैसी उच्च उपाधियाँ प्राप्त कर प्राथमिक स्तर पर टेट एवं विश्वविद्यालयी स्तर पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा संचालित नेट परीक्षा उत्तीर्ण कर अध्यापन का अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी संस्कृत भाषा का योगदान महत्वपूर्ण है। संस्कृत में आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थ 'चरक संहिता' में विभिन्न रोगों के लक्षण एवं अनेक उपचार हेतु प्राकृतिक एवं आयुर्वेदिक औषधियों के बारे में विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। शल्य चिकित्सा का चरमोत्कर्ष भी आयुर्वेद के ग्रन्थों में देखने को मिलता है। महाभारत काल में विभिन्न रसायनों से युक्त गरम जल में स्नान करने से योद्धाओं के घाव ठीक हो जाते थे। इस प्रकार संस्कृत भाषा के अध्ययन से आयुर्वेदिक चिकित्सक बनकर जीवन का निर्वाह किया जा सकता है।

हमारे देश की सामाजिक व्यवस्था संस्कृत साहित्य में वर्णित षोडश संस्कारों से युक्त है। इसके लिए वैदिक ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित विस्तृत कर्मकाण्ड की परम्परा है। इसकी शिक्षा भी हमारे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में दी जाती है। इसके अन्तर्गत वैदिक मंत्रों के सस्वर वाचन एवं यज्ञ अनुष्ठान आदि के विभिन्न नियमों के ज्ञान की शिक्षा प्रबुद्ध आचार्यों से प्राप्त कर कोई भी व्यक्ति कर्मकाण्ड के क्षेत्र को अपनी आजीविका का साधन बना सकता है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त प्रत्येक कार्य में कर्मकाण्ड से सम्बन्धित क्रिया–कलाप का संपादन हमारे समाज में विज्ञपंडितों द्वारा किया जाता है।

मानव जीवन विभिन्न संघर्षों से भरा हुआ है। विषम परिस्थितियों में मानसिक अशान्ति होने पर हम अपने भविष्य को जानने के लिए उत्सुक होते हैं। वैदिक साहित्य में वर्णित छः वेदांगों में ज्योतिष को नेत्र की संज्ञा दी गयी है। संस्कृत साहित्य में ज्योतिष शास्त्र से संबंधित श्रेष्ठ ग्रन्थों की सुविस्तृत परम्परा है। इसके आधार पर सौरमास, चन्द्रमास एवं मौसम का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। ज्योतिष एवं हस्तरेखा ज्ञान के माध्यम से किसी भी व्यक्ति के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। सामुद्रिक शास्त्र के माध्यम से किसी व्यक्ति की शारीरिक संरचना को देखकर उसके व्यक्तित्व को जाना जा सकता है। इस प्रकार संस्कृत भाषा के ज्ञान के द्वारा व्यक्ति ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान प्राप्त कर ज्योतिषी के रूप में कार्य कर अपनी जीविका चला सकता है।

संस्कृत भाषा का साहित्य विस्तृत एवं व्याकरण सुनिश्चित है। इसीलिए इस भाषा का कम्प्यूटर के क्षेत्र में विशेष महत्व है। संस्कृत भाषा में शास्त्री, आचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण कर व्यक्ति सेना में धर्मगुरू आदि की नौकरी प्राप्त कर सकता है। हमारी सरकार ने प्रशासनिक सेवाओं में भी संस्कृत भाषा को स्थान दिया है। न्यायिक क्षेत्र में 'याज्ञवल्क्य स्मृति' जैसी स्मृति ग्रन्थों का अत्यधिक महत्व है। इन ग्रन्थों में दीवानी एवं फौजदारी से सम्बन्धित विविध विषयों का ज्ञान कराया गया है।

इस प्रकार संस्कृत भाषा का क्षेत्र भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में व्यापक है। इस भाषा का सम्यक् ज्ञान भारत से बाहर 250 से ज्यादा विश्वविद्यालयों में कराया जा रहा है। वर्तमान में अमेरिका, रूस, जर्मनी, थाईलैंड, जापान आदि अनेक देश संस्कृत को अत्यधिक महत्व दे रहे हैं। संस्कृत में उच्चारण क्षमता अच्छी होने पर आप रेडियो, दूरदर्शन के साथ ही हिन्दी प्रिंट के साथ अंग्रेजी और संस्कृत विषय का स्नातक स्तर पर अध्ययन कर आप अनुवादक के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। संस्कृत एवं वैदिक साहित्य में भरपूर ज्ञान एवं अच्छा पद पाने के लिए अच्छे शिक्षण संस्थान से जुड़ना आवश्यक है। कई संस्थान अनेक रोजगार परक पाठ्यक्रम संचालित कर रहे है। इनमें प्रमुख है –

1. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
2. लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली
3. राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति
4. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली
5. जगद्गुरू रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
6. संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन
7. महर्षि पतंजलि विश्वविद्यालय, भोपाल

बेटी ही बचाएगी

गुंजन गोयल
एम0ए0 प्रथम वर्ष

त्याग की सूरत है बेटी। ममता की मूरत है बेटी।।
संस्कारो की जान है बेटी। हर घर की शान है बेटी।।
खुशियों का संसार है बेटी। प्रेम का आधार है बेटी।।
शीतल सी एक हवा है बेटी। सब रोगों की दवा है बेटी।।
ममता का सम्मान है बेटी। मात पिता का मान है बेटी।।
आंगन की तुलसी है बेटी। पूजा की कलसी है बेटी।।
सृष्टि है शक्ति है बेटी। दृष्टि है भक्ति है बेटी।।
श्रद्धा है, विश्वास है बेटी। जीवन की एक आस है बेटी।।

पोस्टर प्रतियोगिता एवं संक्रामक रोगों पर विशेष व्याख्यान

इनरव्हील क्लब और आर0सी0ए0 कन्या महाविद्यालय, की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई–1 एवं इकाई–2 के संयुक्त प्रयासों से ''सेव द प्लैनेट अर्थ पंचतत्व'' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं संक्रामक रोगों पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

पोस्टर प्रतियोगिता में छात्राओं की सहभगिता उत्साहजनक रही इस प्रतियोगिता में खुशनुमा बी0ए0 तृतीय वर्ष ने प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान शिवानी शर्मा एम0ए0 उत्तरार्द्ध ने प्राप्त किया तथा तृतीय स्थान खुशबू बी0ए0 तृतीय वर्ष ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम के अगले चरण में संक्रामक रोगों पर विशेष व्याख्यान का आयोजन था, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में मथुरा जिले की प्रख्यात स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ0 मुक्ति माहेश्वरी ने विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों से बचाव व उपचार पर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि की रूप में शहर की पालिकाध्यक्षा श्रीमती मनीषा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में छात्राओं को संक्रामक रोगों के प्रति सजग व आवश्यक जानकारी रखने के लिए प्रेरित किया। उपरोक्त गतिविधियां इनर व्हील क्लब की अध्यक्षा श्रीमती हेमानंदा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुईं। इनरव्हील क्लब की सचिव अंशु मदान ने कार्यक्रम के विषय पर अपने विचार व्यक्त किये तथा क्लब की सी0जी0आर0 श्रीमती वंदना मेहता ने भी छात्राओं को संक्रामक रोगों से बचाव के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये और धन्यवाद ज्ञापन दिया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डा0 भारती सागर ने किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मंजु दलाल सहित, डॉ0 अर्चना पाल, डॉ0 अंजुबाला अग्रवाल, शीला मिश्रा, राजकुमारी पाठक, पूजा पालीवाल आदि उपस्थित रहीं।

एकता दिवस

महाविद्यालय में सरदार बल्लभ भाई पटेल जी की जयन्ती राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनायी गयी। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ कॉलेज प्राचार्या डॉ0 प्रीति जौहरी ने दीप प्रज्वलन कर किया। कार्यक्रम में छात्राओं ने सरदार पटेल के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कविता, संस्मरण व भाषण के माध्यम से प्रकाश डाला। छात्रा कु0 सरिता गौतम ने सरदार पटेल पर आधारित एक कविता पढ़ी, कु0 मुक्ति आचार्य ने उनसे सम्बन्धित एक संस्मरण पढ़ा व कु0 प्राची पालीवाल ने अंग्रेजी में एक भाषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के0 आर0 कॉलेज के राजनीति शास्त्र के प्रोफेसर डॉ0 अशोक जौहरी जी ने इस सन्दर्भ में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का दिन शहीद दिवस के रूप में मनाया जाए या जयन्ती के रूप में क्योंकि आज के दिन जहाँ सरदार बल्लभ भाई पटेल की जयन्ती है वहीं आज ही के दिन इंदिरा गाँधी की हत्या कर दी गई थी। उन्होंने कहा राष्ट्रीय एकता एक चिन्तनीय विषय है इसलिए हम सबको इस प्रकार के कार्यक्रम मनाकर इतिश्री नहीं कर लेनी चाहिए बल्कि इस भाव को जीवन में धारण कर सभी को भारतीय होना चाहिए न की जातिवाद और सम्प्रदाय के नाम पर विभाजित होना चाहिए। उन्होंने कहा राष्ट्रवाद एक भावना है जो हम सबमें समान रूप से और प्रबल रूप से होनी चाहिए तभी हमारा राष्ट्र प्रगतिपथ पर अग्रसर रह सकता है। समापन डॉ0 भारती सागर द्वारा सभी को राष्ट्रीय अखण्डता की प्रतिज्ञा दिलाकर किया गया। धन्यवाद ज्ञापन डा0 प्रीति जौहरी जी ने किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अंजना तिवारी ने किया।

सामूहिक स्वच्छता अभियान

महाविद्यालय परिसर में शिक्षिकाओं तथा छात्राओं द्वारा सामूहिक रूप से स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें सभी छात्राओं ने प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी व शिक्षिकाओं के साथ महाविद्यालय के क्रीडांगन, पुस्तकालय, अध्ययन कक्ष, अध्यापिका कक्ष, कार्यालय आदि की सफाई की। इस सन्दर्भ में प्राचार्या जी ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य छात्राओं को स्वच्छता के लिए जागरूक करना है ताकि वे न केवल महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ रखें वरन् जहाँ भी जाएं उनमें ये आदत बनी रहे कि हमें उक्त स्थान को स्वच्छ रखना है।

सी0सी0टी0वी0 कैमरों का लोकार्पण

गाँधी जयन्ती के पावन अवसर पर महाविद्यालय में शासन द्वारा लगवाए गए सी0सी0टी0वी0 कैमरों का लोकार्पण माननीय जिलाधिकारी बी0 चन्द्रकला द्वारा किया गया। इस अवसर पर छात्राओं को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा कि यहाँ आकर मुझे खुशी हुई कि यहाँ सभी विषयों की योग्य शिक्षिकाए हैं और सभी विषय पढ़ाये जाते हैं। छात्राओं का उत्साह वर्धन करते हुए उन्होंने छात्राओं को अपने अपने पैरों पर खड़े होने और आर्थिक रूप से सक्षम बनने की प्रेरणा दी। इस कार्यक्रम में अपर जिलाधिकारी व जिला विद्यालय निरीक्षक भी उपस्थित रहे। साथ ही देश में छेड़ी गई स्वच्छता अभियान मुहिम के तहत महाविद्यालय परिसर में कॉलेज प्राचार्या डॉ0 प्रीति जौहरी, शिक्षिकाओं व छात्राओं ने मिलकर राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में सफाई कार्य किया तथा अपने घर, शहर व महाविद्यालय को स्वच्छ रखने का संकल्प लिया।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्थापना दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें पालिकाध्यक्षा श्रीमती मनीषा गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने वृक्षारोपण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज प्रबन्ध समिति के सचिव श्री गिरीश अग्रवाल जी ने की। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं ने एक सामूहिक गान प्रस्तुत किया तथा छात्रा मुनेश कुमारी ने कटते हुए वृक्षों के दर्द पर एक कविता सुनाई। कार्यक्रम में श्रीमती मनीषा गुप्ता जी व कॉलेज प्राचार्या डॉ0 प्रीति जौहरी जी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम की संयोजिका डॉ0 भारती सागर व श्रीमती मंजू दलाल थी जिन्होनें कॉलेज परिसर में कई प्रकार के वृक्ष राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में छात्राओं के सहयोग से लगवाए। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 भारती सागर ने किया। इस अवसर पर कॉलेज की समस्त शिक्षिकाओं ने भी वृक्ष लगाए ।

अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताऐं

महाविद्यालय में दिनांक 10.12.2014 को अन्तर्महाविद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें मथुरा के ही नही अपितु अन्य शहरों के महाविद्यालयों की छात्राओं ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी, सचिव गिरीश चन्द, श्री ललित किशोर मित्तल, श्री राजेन्द्र अग्रवाल एवं श्री महेश मित्तल ने सामूहिक रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर किया। इन प्रतियोगिताओं में भाषण प्रतियोगिता स्व0 बाबू हरीश चन्द्र अग्रवाल जी, वाद–विवाद प्रतियोगिता श्रीमती सावित्री देवी मूलचन्द सर्राफ, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता श्रीमती शान्ति देवी अग्रवाल पत्नी श्री बैजनाथ सर्राफ, अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता श्री किशन लाल सर्राफ जी की स्मृति में आयोजित की गयी। इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल में डा0 अनिल सक्सैना, डा0 रमा शंकर पाण्डे, डा0 मधुबाला गर्ग, डा0 कल्पना सारस्वत, श्रीमती साधना नागर, शालिनी शर्मा, श्री विक्रम सिंह थें। आयोजित प्रतियोगिताओं में हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में नीतू राजपूत, प्रथम, सोनम गर्ग, द्वितीय (बी0एस0ए0 कॉलेज), पूजा सिंह (टीकाराम कॉलेज) तृतीय स्थान पर रहीं। अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता में अदिति सिंह (टीका राम कॉलेज) प्रथम, प्रियंका झॉ (बी.एस.ए. कॉलेज) द्वितीय, प्रियांशी चाहर (अमर नाथ कॉलेज) तृतीय स्थान पर रहीं। वाद–विवाद प्रतियोगिता में अंकिता (बी.एस.ए. कॉलेज) प्रथम, डिपंल शर्मा (आर.सी.ए. कॉलेज) द्वितीय, उर्वशी चौधरी (अमर नाथ कॉलेज) तृतीय स्थान पर रहीं। भाषण प्रतियेगिता में नीति शर्मा (आर. सी.ए. कॉलेज) प्रथम, मेधा भारद्वाज (फैज ए आम कॉलेज) व मनीषा गोस्वामी (आर.सी.ए. कॉलेज) द्वितीय एवं आकांक्षा मिश्रा (बी.एस.ए. कॉलेज) तृतीय स्थान पर रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री रामबाबू अग्रवाल जी ने की। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. अंजुबाला अग्रवाल थी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अर्चना पाल ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय की समस्त शिक्षिकाऐं उपस्थित थी।

शैक्षिक भ्रमण

महाविद्यालय की छात्राओं ने दिनांक 11.12.2014 को मथुरा लोकसभा क्षेत्र से सासंद हेमा मालिनी के सौजन्य से शैक्षिक भ्रमण के अर्न्तगत संसद भवन में लोकसभा के शीतकालीन सत्र का अवलोकन किया। प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी जी के निर्देशन में लगभग 100 छात्राओं ने संसद की कार्यवाही देखी जिसमें जन प्रतिनिधियों द्वारा धर्मान्तरण के विषय पर चर्चा की जा रही थी। सायं तीन बजे से चार बजे के लोकसभा सत्र के दौरान छात्राओं में काफी उत्साह था। उन्होंने लगभग 30 मिनट तक सदन की कार्यवाही देखी। साथ ही छात्राओं को त्रिमूर्ति भवन (नेहरू स्मारक) तथा नेहरू तारामंडल एवं अक्षरधाम मंदिर भी दिखाया गया। इस कार्य में सांसद प्रतिनिधि श्री जनार्दन शर्मा का विशेष सहयोग रहा। इस भ्रमण के दौरान छात्राओं को संसद भवन एवं त्रिमूर्ति भवन के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। इस अवसर पर डा0 अंजना तिवारी, श्रीमती शीला मिश्रा, डा0 योगेन्द्री, श्रीमती पूजा पालीवाल एवं मीनाक्षी घोष आदि शिक्षिकाऐ भी छात्राओं के साथ थी।

आतंकवाद की निन्दा

पेशावर के मिलिट्री स्कूल में मंगलवार दिनांक 16.12.2014 को हुए आतंकवादी हमले की प्राचार्या एवं समस्त महाविद्यालय परिवार ने घोर निन्दा की है तथा निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया है।

आतंकवाद जो आज पूरे विश्व में मानवता के शत्रु के रूप में पनप रहा है, वह न तो किसी कानून को मानता है और न किसी राज्य की व्यवस्था को मानता है। देश में किसी न किसी प्रकार से आतंक को बढ़ावा मिल रहा है। कभी धर्म के नाम पर कभी भाषा के नाम पर और कभी सम्प्रभुता के लिए। आतंकवाद के संरक्षक के रूप में सबसे बड़ा हाथ पाकिस्तान का रहा है। भारत के खिलाफ जो आतंकवादी संगठन है अलकायदा तालिबान, तहरीक–ए–तालिबान पाकिस्तान में ही फले फूले और समृद्ध हुए है। पाकिस्तान में पल्लवित पुष्पित आतंकवाद के कुपरिणाम स्वरूप पेशावर के आर्मी स्कूल में बच्चों का जो नरसंहार सामने आया है, यह विश्व के जघन्यतम अपराधों में गिना जा रहा है। पाकिस्तान की इससे आँखे खुल गयी है। आशा है पाकिस्तान इससे सबक लेगा और तमाम आतंकी संगठनों को पाकिस्तान से नष्ट कर देगा।

प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी, प्रबुद्ध शिक्षक वर्ग एवं विद्यार्थी इस दुर्घटना से स्तब्ध हैं। हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि उन पाकिस्तानी माता पिता जिनके बच्चे इस नरसंहार की बलि चढ़ गये है उनको सांत्वना प्रदान करें, स्वयं शक्ति प्रदान करें और पाकिस्तान को सदबुद्धि दे कि वे आतंकवादियों को संरक्षण ना दें।

कैरियर बनाने की दी जानकारी

महाविद्यालय में कैरियर काउंसलिंग प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. अंजुबाला अग्रवाल के निर्देशन में कैरियर लांचर संस्था की ओर से आये मयंक गर्ग और अंकिता ने स्नातक के बाद कैरियर बनाने संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी छात्राओं को दी। छात्रायें स्नातक के बाद किन–किन प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठ सकती हैं व प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कैसे करें, इस संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश छात्राओं को दिये गये। प्राचार्या डॉ. प्रीति जौहरी ने मयंक गर्ग को धन्यवाद दिया।

व्यवसाय परक कैरियर

महाविद्यालय में खजानी वूमेंस पॉलीटेक्निक से पधारी श्रीमती शिप्रा राठी व उनकी सहयागियों ने छात्राओं को अध्ययन के साथ–साथ विविध व्यवसाय परक कोर्सो की जानकारी दी। उन्होंने फैशन डिजाइनिंग, ब्यूटीशियन, फ्लावर मेकिंग, पेंटिंग आदि कोर्सो के विषय में छात्राओं को विस्तार से जानकारी दी। छात्रायें अल्पावधि व दीर्घावधि कोर्स करके स्वावलम्बन की दिशा में कदम बढ़ा सकती हैं। इस अवसर पर उन्होंने छात्राओं को विशेष सुविधायें भी देने की घोषणा की।

Sweet Memories .....